4

असाम्प्रदायिक मसीहियत:
यह कैसे सम्भव है?

एक राजकुमार और उद्धारकर्ता की तरह पिता के दाहिने हाथ महिमा पाने के लिए पृथ्वी से जाने से कुछ देर पहले, यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो'' (लूका 24:49ख)। अपनी मृत्यु से पहले भी, यीशु ने उन्हें पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा की थी, जिसने सारी सच्चाई में उनकी अगुआई करनी थी। पुनः, उसने ''उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:4, 5)।

यह आज्ञा देने के थोड़ी देर बाद, यीशु उनके पास से उठा लिया गया, ''और बादल ने उसे उन की आंखों से छिपा लिया'' (प्रेरितों 1:9ख)। ''तब वे ... यरूशलेम को लौटे'' (प्रेरितों 1:12)। प्रेरितों 2 अध्याय में हम पढ़ते हैं:

> ... वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरितों 2:1-4; प्रेरितों 1:9-12 भी पढ़ें)।

यह उद्धारकर्ता द्वारा की गई प्रतिज्ञा के पूरा होने की बात है जो उसने प्रेरितों से की थी कि उन्हें ऊपर से सामर्थ मिलेगी। इस सच्चाई से बाइबल का कोई भी होनहार छात्र इन्कार नहीं करेगा। हमारा प्रभु चेलों को संसार के उद्धार के लिए तब तक बाहर नहीं भेजना चाहता था जब तक उन्हें पवित्र आत्मा से भरपूर होकर सामर्थ न दे दी जाए। हमारा यह निष्कर्ष ही होगा कि इस प्रकार सामर्थ से भरपूर होकर उन्होंने जो काम किया वह पवित्र आत्मा का काम था। किसी को भी इसमें संदेह नहीं होना चाहिए कि उसने वही किया जो वह करने के लिए आया था अर्थात उसने सारी सच्चाई में उनकी अगुआई की। निश्चय ही इसके बाद

प्रचारकों के रूप में उनके द्वारा किया गया काम पवित्र आत्मा का ही काम था। उनकी बात को मानने का अर्थ पवित्र आत्मा की बात को मानना है।

ऊपर से सामर्थ पाए हुए इन प्रेरितों के काम के विपरीत चलकर हम पवित्र आत्मा की अगुआई में चलने का दावा नहीं कर सकते। अन्य शब्दों में धार्मिक व्यक्ति पवित्र आत्मा की अगुआई में इस प्रकार चलता है कि उसका धार्मिक जीवन तथा व्यवहार आत्मा की सामर्थ से चलने वाले लोगों के जीवन तथा व्यवहार से मेल खाता है। ईश्वरीय आत्मा की अगुआई में चलने वालों के पीछे विश्वास से चलने वाला व्यक्ति साम्प्रदायिकवाद से स्वतन्त्र है अर्थात उसका सम्बन्ध किसी साम्प्रदायिक कलीसिया से नहीं है बल्कि वह केवल एक मसीही अर्थात प्रभु का चेला है। इस मार्गदर्शक की जिसने इन उपदेशकों को दिशा दी, मानने वाले सब लोग उसी कलीसिया के सदस्य हैं जिसके वे पहले थे अर्थात वे परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य हैं। परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य आज भी उसी प्रकार बनते हैं जैसे उस समय इस सामर्थ की अगुआई में लोग बने थे। अर्थात, वे ''कलीसिया में शामिल'' नहीं हुए थे, बल्कि परमेश्वर उनको जो ''उद्धार पाते थे'' अपनी कलीसिया में मिलाता था। इस प्रकार उद्धार पाए हुए लोगों से ही कलीसिया बनती है। निश्चय ही कोई भी इस पर प्रश्न नहीं करेगा कि हर कोई जो पवित्र आत्मा की बात विश्वास से मानता है उसे उद्धार मिला है या परमेश्वर उन पर भी वैसे ही दया करेगा जैसे उसने यरूशलेम में आत्मा की बात मानने वालों पर की थी। इन धारणाओं को सत्य मानने से हमें समझ आ जाती है कि इस प्रकार उद्धार पाए हुए प्रत्येक व्यक्ति को प्रभु, अपनी कलीसिया में मिलाता है।

इस शिक्षा को गलत न समझने के लिए पाठक की निष्कपटता और भलाई पर भरोसा किया जाना चाहिए। यह सही है कि उद्धार के लिए पवित्र आत्मा की अगुआई में चलकर परमेश्वर की उसी कलीसिया में मिलाया जा सकता है, लेकिन किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में ''शामिल होकर'' या उससे जुड़कर हम साम्प्रदायिकवाद में भी जा सकते हैं। ऐसा करने वाला दो कलीसियाओं से जुड़ा होने के कारण, एक साम्प्रदायिक मसीही बन जाता है; क्योंकि उद्धार पाने के समय उसे हमारे प्रभु द्वारा अपनी कलीसिया में मिलाया गया था। परन्तु बाद में वह मनुष्यों के बनाए हुए संस्थान में शामिल हो गया जिसे लोग कलीसिया *कहते हैं।* कई बार भले मन वाले लोग यही बात करते हैं। परन्तु साम्प्रदायिक कलीसिया का प्रत्येक कदम पवित्र आत्मा की शिक्षा से आगे बढ़ना है जो कि उसकी बिनतियों के विपरीत है।

साम्प्रदायिकवाद या डिनोमिनेशनलिज़्म नये नियम के इतिहास में प्रत्येक मसीही तथा प्रत्येक कलीसिया के आदर्श के विपरीत है। नये नियम के दिनों में कभी किसी मसीही को आत्मा की प्रेरणा प्राप्त प्रेरितों या नबियों ने किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में शामिल होने की अगुआई नहीं की थी। एक मसीही अर्थात प्रभु का चेला होने और उसकी पवित्र कलीसिया का सदस्य होने से आगे बढ़ने वाला परमेश्वर के अपने आत्मा की अगुआई वाले पवित्र लोगों के निर्देशों तथा उदाहरणों के विपरीत जाने के कारण स्वयं ज़िम्मेदार बनता है।

यदि कोई परमेश्वर के अनुरोधों के बावजूद इसके विरुद्ध ऐसी जिम्मेदारी लेना चाहता है, तो यह उसका अपना काम है; परन्तु मेरा काम ज़िम्मेदारी को इसके करने वाले के घर

रखना है, मैं इसे वहीं पर छोड़ता हूं। जिस प्रकार नये नियम के दिनों में लोगों के लिए केवल मसीही बनना सञ्भव था वैसे ही आज भी लोगों के लिए केवल मसीही बनना सञ्भव है; लोगों के केवल मसीही नहीं होने का कारण या तो यह है कि वे बनना नहीं चाहते या उन्हें मसीह की सच्चाइयों का ज्ञान कम है।

चेलों पर पवित्र आत्मा आने के तुरन्त बाद, एक विशाल मण्डली इकट्ठी हो गई थी। पतरस, या यूं कहें कि पवित्र आत्मा पतरस को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए अवसर का लाभ उठाकर प्रचार करने लगा। यीशु ने अपने चेलों को ऊपर से शञ्ति पाने तक यरूशलेम में ''ठहरने'' के लिए कहा था। फिर उन्होंने सब लोगों में सुसमाचार का प्रचार करना था। वे गए थे, उन्होंने प्रतीक्षा की थी और पवित्र आत्मा उन पर उतरा था; इस प्रकार वे प्रचार करने के लिए तैयार थे।

पतरस एक असाञ्प्रदायिक मसीही या चेला था। एक असाञ्प्रदायिक प्रचारक तथा उपदेशक होने के कारण, उसने किसी साञ्प्रदायिक कलीसिया का प्रतिनिधित्व नहीं किया अर्थात वह केवल उस कलीसिया का सदस्य था जिसमें प्रभु उद्धार पाए हुए लोगों को मिलाता है। फिर, तो निश्चय ही उसका काम किसी साञ्प्रदायिक कलीसिया का काम नहीं था और उसने कोई साञ्प्रदायिक कलीसिया नहीं बनाई थी। उसके सुनने वाले यहूदी लोग थे जो परमेश्वर अर्थात प्रभु के अपने पिता की आराधना करने के लिए दूर-दूर से आए थे। ये यहूदी लोग श्रद्धा के साथ-साथ बहुत ही धार्मिक और पवित्र जीवन बिताते थे, लेकिन वे यीशु को परमेश्वर का पुत्र नहीं मानते थे। एकत्र होने के समय उनका यही विश्वास था; इस कारण पतरस का संदेश उन्हें यह दिखाने के लिए था कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र था। पिन्तेकुस्त के इस दिन से पचास दिन पूर्व, इन यहूदियों ने यह मानकर कि वे एक धोखेबाज़ को मृत्यु दे रहे हैं, परमेश्वर के पुत्र के लहू से ही अपने हाथ रंगे थे। पतरस के सुनने वाले सांसारिक नहीं बल्कि धार्मिक सोच वाले लोग थे, वे नास्तिक नहीं बल्कि इब्रानी लोगों और दानिय्येल की तरह परमेश्वर की सेवा के लिए मरने को तैयार रहने वाले लोग थे। ये प्रार्थना करने वाले लोग थे, उमंग से भरे हुए भञ्ति करने वाले लोग थे, वास्तव में इस अवसर के लिए ये बहुत ही अच्छे श्रोता थे।

सबसे पहले पतरस ने उस प्रात: यरूशलेम में आश्चर्यजनक शञ्ति के प्रदर्शनों से सञ्बन्धित विचारों से जुड़ी पूर्व धारणा और गलतफहमी को दूर किया। ऐसा उसने उनकी बाइबल अर्थात पुराने नियम से उद्धृत करके किया। फिर वह वास्तविक संदेश देने लगा:

> हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुञ्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया (प्रेरितों 2:22-24क)।

इस संक्षिप्त संदेश में पवित्र आत्मा ने पतरस के द्वारा यीशु के जीवन का प्रचार किया। उसने उसके आश्चर्यकर्मों, सामर्थ के कामों और चिह्नों तथा परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को स्वीकार करने के बारे में बताया। उसने ऐलान किया कि इन सुनने वालों ने दुष्ट लोगों की सहायता से परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाकर उसकी हत्या कर दी और परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिला दिया। इसका उद्देश्य यीशु के मुर्दों में से जी उठने की बात सिद्ध करना था। आत्मा ने इस्राएल के मधुर गीत लेखक जिसे ये लोग ईश्वरीय नबी व लेखक के रूप में मानते थे, से उद्धृत करते हुए प्रमाण दिए। उद्धरण से, यह बात निश्चित थी कि दाऊद किसी के पुनरुत्थान की बात कर रहा था अर्थात या तो वह अपने पुनरुत्थान की बात कर रहा था या किसी दूसरे के लिए कह रहा था। आत्मा ने इन तथ्यों की ओर ध्यान देने के लिए कहा कि दाऊद मर चुका था, गाड़ा गया था, और उसकी कब्र उस दिन तक उनमें विद्यमान थी। इसलिए, ज़्योंकि उसने अपने लिए तो यह बात नहीं कही होगी, तो फिर उसने यह किसके लिए कहा था? आत्मा ने कहा कि दाऊद, एक नबी होने के कारण जानता था कि परमेश्वर ने दाऊद के पेट के फल को उसके सिंहासन पर बिठाने की शपथ खाई थी, इसलिए वह मसीह के जी उठने की बात कर रहा था:

> इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। ... सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों 2:32-36)।

इन भले और श्रद्धालु सुनने वालों को समझाने के लिए इतना ही काफ़ी था। अब वे अपने हाथों पर लहू के धज़्बे और परमेश्वर के निज पुत्र की हत्या करने के दोष अपने मनों में महसूस कर सकते थे। ''तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम ज़्या करें?'' (प्रेरितों 2:37)।

ज़्या उन्होंने अपना दोष स्वीकार कर लिया था? इसमें किसे संदेह हो सकता है? ज़्या ये पुकारने वाले लोग यीशु को मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र मानते थे जिसे उन्होंने पचास दिन पहले क्रूस पर चढ़ाया था? ज़्या उन्हें संदेह था कि परमेश्वर ने उसे उसके सामर्थ के कामों से स्वीकृत कर लिया है? ज़्या उन्होंने वही किया था जो आत्मा ने उन्हें करने के लिए कहा था? अर्थात, ज़्या उन्हें ''पज़्का पता'' था कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह ज़ी बना दिया है? यदि उन्हें सचमुच ही सुसमाचार के इस महान सत्य का ज्ञान था, और यदि उन्हें वैसे ही पता था जैसे पतरस को आत्ज़ा ने उन्हें जानने के लिए कहा था अर्थात ''पज़्के तौर पर,'' पूर्ण विश्वास से, बिना किसी संदेह के, तो उनके विश्वास में कमी ज़्या थी? बिना संदेह के पूर्ण विश्वास से यह पता होना आवश्यक है कि यीशु परमेश्वर का निज पुत्र था;

अर्थात सामर्थ के उसके काम परमेश्वर द्वारा उसकी स्वीकृति का प्रमाण थे; कि वह क्रूस पर चढ़ाया गया था, मुर्दों में से जी उठा और ''प्रभु भी और मसीह भी'' बनकर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा था। निश्चित रूप से पूर्ण विश्वास से यह पता चल जाने पर विश्वास करने के लिए और ज़्या करना ज़रूरी होता है ? पूर्ण विश्वास से इन महान तथ्यों को मान लेने वाले को जिसका मन पुकार उठता है, कि ''मैं ज़्या करूं ?'' विश्वास करने के लिए कहने की आवश्यकता है ? इससे अधिक और विश्वास ज़्या हो सकता है और वह यह विश्वास कैसे करेगा ?

विश्वास करने वाले इन लोगों से, जो यीशु के विषय में इन महान सच्चाइयों को निश्चित रूप से जानते थे, दोष स्वीकार करने वाले से पवित्र आत्मा ने कहा था:

> मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। ज़्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुज़्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा (प्रेरितों 2:38, 39)।

इसके बाद, परमेश्वर की किताब हमें बताती है, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:41-47ख)।

याद रखें कि हम एक ''कलीसिया की सभा'' की समीक्षा कर रहे हैं जो किसी भी तरह साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं है। हम एक कलीसिया को संसार के उद्धार के काम में लगे हुए देख रहे हैं। हमारे प्रभु द्वारा भेजे पवित्र आत्मा से शिक्षा देने वाला व्यज़्ति इस असाज़्प्रदायिक कलीसिया का एक सदस्य अर्थात केवल एक मसीही था। यह सारी शिक्षा असाज़्प्रदायिक शिक्षा अर्थात शुद्ध और सरल थी। इस असाज़्प्रदायिक कलीसिया की सभा में इस असाज़्प्रदायिक शिक्षक ने अविश्वासियों को बिना संदेह के ''सुनिश्चित तौर पर जानने'' के लिए कहा कि यीशु ही ''मसीह भी है और प्रभु भी।'' जितने लोग यह जानते थे और जितनों ने अपने मन में अपना दोष स्वीकार कर लिया था उन्हें ''मन फिराने'' की आज्ञा दी गई थी। इस प्रकार इस असाज़्प्रदायिक कलीसिया की सभा में, उद्धार रहित लोगों को बिना संदेह किए सुसमाचार के महान तथ्यों पर विश्वास करने, मन फिराने और अन्त में ''पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में'' बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी।

फिर, इसका अर्थ यह हुआ कि आज यीशु का प्रचार वैसे ही करना जैसे पतरस ने किया था, असाज़्प्रदायिक शिक्षा देना है। ऐसा करने के लिए, हमें यीशु को परमेश्वर के स्वीकृत पुत्र के रूप में, जी उठे और सिंहासन पर विराजमान प्रभु और मसीह के रूप में प्रचार करना आवश्यक है। उद्धार रहित लोगों को विश्वास करने, या ''निश्चित रूप से'' जानने के लिए कहना आवश्यक है। फिर इन सच्चाइयों को जानने वाले सभी लोगों से मन फिराने और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने का आग्रह करना आवश्यक है।

इसी प्रकार, जब ''निश्चित रूप से'' जानने पर किसी का हृदय छिद जाता है कि यीशु प्रभु भी है और मसीह भी, अर्थात जो मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेता है, तो उसका उद्धार होता है। वह इस प्रकार प्रभु का एक चेला अर्थात मसीही बन जाता है और हमारे प्रभु की कलीसिया में मिला लिया जाता है। आज कलीसिया का काम जो आत्मा के काम की नकल है जिसे परमेश्वर के स्वीकृत होने के रूप में हमें सिखाने के लिए लिखा गया है और इस असाज़्प्रदायिक सभा की तरह ही आत्मा के निर्देशन में परमेश्वर की स्वीकृति के लिए है। यदि ऐसा न होता, तो बाइबल का हमारे लिए कोई महत्व नहीं होना था।

एकता एवं एक होना

''... हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाईं एक हों'' (यूहन्ना 17:11)।

''... मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुज़्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है'' (इफिसियों 4:3-6)।

''सो यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिज़, और एक ही मनसा रखो'' (फिलिप्पियों 2:1, 2)।